The question is:

"This House is of opinion that in view of increased food production during the current year, zonal restrictions on the movement of foodgrains be removed forthwith."

The motion was negatived.

18.29½ hrs.

RESOLUTION: REORGANISATION OF PLANNING COMMISSION

SHRI XAVIER (Tirunelveli): I move:

"This House is of opinion that the Planning Commission be reorganised on the basis of the recommendations of the Administrative Reforms Commission."

Sir.....

MR. CHAIRMAN: The hon. Member may continue on the next occasion. Now we have to take up the half-an-hour discussion.

18.30 hrs.

*DELHI WAQF BOARD

श्री कंवर लाल गुप्त (दिल्ली सदर): अध्यक्ष महोदय, मेरी जो आधे घंटे की बहस है वह दिल्ली वक्फ बोर्ड के नामिनेशन्स के बारे में है। इस बोर्ड को 3 -9-67 को बन जाना चाहिये था लेकिन लगभग 7 महीने हो गये, अभी तक बोर्ड कांस्टीट्यूट नहीं हुआ। इसका मुख्य कारण यह है कि दिल्ली सरकार जो बोर्ड बनाना चाहती है, हमारे केन्द्रीय सरकार के मन्त्री, माननीय फखरुद्दीन अली अहमद साहब उसको पसन्द नहीं करते हैं। मुझे बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि जो हमारा विधान है, जो हमारे विधान की स्पिरिट है, उसको ताक में रख करके हमारे केन्द्र के मन्त्री महोदय अपनी राजनीति खेलना चाहते हैं। मैं आपके सामने वक्फ बोर्ड की धारा कोट कर रहा हूं। सेक्शन 11 में यह स्पष्ट तौर से लिखा हुआ है कि स्टेट गवर्नमेंट इस बोर्ड को बना सकती है:

"The Members of the Board shall be appointed by the State Government by notification in the Official Gazette from any one or more of the following categories of persons, namely State Legislature, Parliament and other persons also".

तो यह अधिकार स्टेट गवर्नमेन्ट का है, दिल्ली सरकार का यह अधिकार है। अब सरकार ने नवें महीने में इसको बनाया। उसके बाद चीफ एग्जीक्यूटिव काउंसिलर ने जो लिस्ट घोषणा करने के लिये रखी थी, वह मन्त्री महोदय को पसन्द नहीं आई और हमें जवाब यह दिया गया कि लेफ्टिनेन्ट गवर्नर और चीफ एग्जीक्यूटिव काउंसिलर में मतभेद हो गया। मेरा कहना यह है कि उन दोनों के बीच में मतभेद नहीं था, वह मतभेद ऊपर से दबाव डालकर पैदा करवाया गया और वह स्वयं फखरुद्दीन अली अहमद साहब ने करवाया। इसलिये कि कहीं जनसंघ मुसलमानों में पापुलर न हो जाये।

आजतक जनसंघ की तस्वीर मुसलमानों में हमारे कांग्रेस के मित्र, कुछ दूसरे लोग और खास तौर से हमारे माननीय मन्त्री जैसे लोग, एक अजीब तरीके से खींचते थे और उसका पोलिटिकल कैपिटल कांग्रेस के लिये उठाना चाहते थे। लेकिन पिछले चुनावों में, दिल्ली में भी और दूसरीजगहों पर भी मुसलमानों ने देख लिया कि ये हमारा पोलिटिकल एक्सप्लायटेशन करना चाहते हैं, मुसलमानों का कोई काम करते हों, ऐसी बात नहीं है। मुसलमानों में जो बैकवर्डनेस है, जो गरीबी है, उसकी

*Half-an-Hour Discussion.